

मेट्रो के लिए सीआईएसएफ ने जारी की गाइडलाइन, हॉटस्पॉट में 60 स्टेशनों की वजह से अभी रेल सेवा शुरू करना मुश्किल

दिल्ली में कोविड -19 से संक्रमण की स्थिति गंभीर बनी हुई है और 60 हॉटस्पॉट पर मेट्रो लाइन स्टेशन पड़ते हैं, ऐसे में मेट्रो सेवा शुरू करना और उसको सुरक्षित तौर पर चलाना एक चुनौती होगी.

नई दिल्ली: देशभर में लॉकडाउन 3 मई तक लागू है. यह आगे बढ़ेगा या नहीं इसे लेकर अभी तक कोई फैसला नहीं हुआ है लेकिन सीआईएसएफ और दिल्ली मेट्रो ने रेल सेवा के संचालन की तैयारियां शुरू कर दी हैं. दिल्ली में रोज लाखों की संख्या में लोग दिल्ली मेट्रो में सफर करते हैं. इसे देखते हुए यात्रियों, सुरक्षाकर्मियों और मेट्रो स्टाफ के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए गुरुवार को सीआईएसएफ ने एक गाइडलाइन जारी की है जिसे ध्यान में रखते हुए अब यात्रियों और मेट्रो कर्मियों को काम करना होगा.

नाम ने छापने के अनुरोध पर दिल्ली मेट्रो के वरिष्ठ अधिकारी ने दिप्रिंट से कहा, 'सीआईएसएफ की गाइडलाइन जरूर आ गई है लेकिन आज दोपहर तक मेट्रो सेवा कब से चलेगी इस पर अंतिम निर्णय नहीं हो सका है. यह निर्णय दिल्ली सरकार और केंद्र सरकार को करना है लेकिन फिर भी हम मेट्रो स्टेशन में दो गज की दूरी के नियम को फालों करेंगे. इसके अलावा मेट्रो के डिब्बे में भी लोगों से दो से तीन सीट छोड़कर बैठने का नियम पालन करने को कहा जाएगा. फिलहाल दिल्ली के 60 स्टेशन कोरोना रेड जोन में आते हैं, ऐसे में निर्णय लेने में सरकार की तरफ से देरी हो रही है.'

आरोग्य सेतु एप और फेस मास्क बने मेट्रो में एंट्री के लिए जरूरी

सीआईएसएफ ने गाइडलाइन जारी करते हुए कहा, 'कोविड-19 महामारी के कारण भारत सरकार ने दिल्ली मेट्रो की सेवाएं प्रतिबंधित कर दी हैं. अब भारत सरकार दिल्ली मेट्रो की सेवाएं यात्रियों के लिए कुछ

सीमाओं के साथ फिर शुरू कर सकती है. इसके लिए सीआईएसएफ कर्मियों की भूमिका और जिम्मेदारी कई गुना बढ़ जाती है. ऐसे में मेट्रो संपत्ति, यात्रियों के साथ-साथ खुद को कोविड-19 महामारी से बचाने की जिम्मेदारी है. यह सभी मानक कोविड-19 के प्रकोप को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है.’

गाइडलाइन में यह भी कहा गया है कि हर यात्री के मोबाइल में आरोग्य सेतु एप कंपलसरी होगा या उन्हीं यात्रियों को प्रवेश मेट्रो में दिया जाएगा जिनके फोन में एप इंस्टॉल होगा. इस एप से यह पहचान की जाएगी कि कहीं यह व्यक्ति वायरस से संक्रमित तो नहीं रहा है या फिर यह उस इलाके से तो नहीं आता जो रेड जोन में हो. यही नहीं इसकी महत्ता इसलिए भी बढ़ जाती है कि केवल ई-पास और ग्रीन कोडित या सुरक्षित श्रेणी के व्यक्तियों को ही प्रवेश की अनुमति होगी.

यात्रा की गाइडलाइन

सीआईएसएफ गाइडलाइन के अनुसार, लॉकडाउन के बाद मेट्रो में सफर करने वाले यात्रियों के लिए अपनी तलाशी के दौरान अपने शरीर से हर प्रकार की धातु की वस्तु को बाहर निकालकर अपने बैग में रखना होगा. यात्रियों के पास अगर बैग नहीं होगा तो उनके लिए ट्रे उपलब्ध करवाई जाएगी. वही व्यक्ति मेट्रो स्टेशन में एंट्री पा सकेगा जिसने अपने चेहरे पर मास्क पहना हुआ होगा. इसके अलावा उसने अपने स्मार्ट फोन में आरोग्य सेतु एप को डाउनलोड किया होगा.

गाइडलाइन के अनुसार सभी मेट्रो स्टेशन पर कम से कम गेट खुलेंगे. बाकि के सभी गेट बंद रहेंगे. स्टेशन में एक नियंत्रित तरीके से यात्रियों को प्रवेश दिया जाएगा. लोगों को प्रवेश द्वार पर ही रोका जाएगा. एक नियंत्रित तरीके से एक-एक करके यात्रियों को प्रवेश दिया जाएगा. अधिकतम यात्रियों को प्रवेश द्वार पर ही रोका जाएगा और यात्रियों को स्टेशन छोड़ते समय सामाजिक दूरी, 1 मीटर से ज्यादा दूरी का विशेष ध्यान

रखना होगा. अगर किसी स्थिति में मेट्रो स्टेशन के बाहर भीड़ ज्यादा हो जाती है तो स्टेशन के बाहर के लोगों पर नियंत्रण रखने के लिए स्थानीय पुलिस अधिकारियों की मदद ली जाएगी.

इसके अलावा मेट्रो परिसर में आने वाले व्यक्तियों की डीएमआरसी कर्मियों द्वारा एंट्री गेट पर थर्मल स्क्रीनिंग की जाएगी. जिन व्यक्तियों का तापमान असामान्य पाया गया या सर्दी, खांसी और फ्लू जैसे लक्षणों मिलते हैं तो उन्हें अंदर प्रवेश नहीं दिया जाएगा. स्टेशन गेट या उसके अंदर लोगों के लिए सेनेटाइजेशन टनल बनाई जाती है तो यात्रियों को उससे गुजरना अनिवार्य होगा. वहीं यात्रियों को लाइन में लगने के दौरान कम से कम दो मीटर की दूरी का फासला रखना होगा. सुरक्षा जांच के लिए इंतजार कर रहे व्यक्ति के लिए भी 1 मीटर की दूरी अनिवार्य होगी.

संदिग्ध यात्रियों और बैगेज से निपटने के लिए सामान्य स्टेशन पर 6 पीपीई और इंटरचेंज स्टेशनों पर 20 पीपीई किट होंगे. सभी कर्मियों को इसके लिए विशेष तौर पर तैयार किया जा रहा है. कर्मचारियों द्वारा उपयोग में आने वाले सभी उपकरणों को नियमित तौर पर साफ किया जाएगा. मेट्रो परिसर में मौजूद सुलभ शौचालय व अन्य दुकानों को भी रेगुलर तौर पर साफ किया जाएगा.

सुरक्षाकर्मियों के लिए नियम

सुरक्षाकर्मियों के लिए गाइडलाइन जारी करते हुए कहा गया है कि ड्यूटी पूरी होने के बाद वो हर दिन अपनी वर्दी अच्छे तरह से साफ करेंगे. समय-समय पर जारी किए गए वर्दी के नियम का पालन भी करेंगे. ड्यूटी खत्म होने के बाद घर लौटने से पहले व अन्य सदस्यों से बात करने से पहले वर्दी और अन्य उपकरण जरूरी तौर पर साफ करें. वहीं आंख, नाक, मुंह को बिना धुले हाथ से छूने से बचे. संदिग्ध व्यक्ति को छूने के बाद तुरंत हाथ साफ करें. मेट्रो परिसर में बने सीसीटीवी नियंत्रण कक्षों में रिजर्व बल सदस्यों के साथ-साथ रिजर्व पीपीई किट भी रखी जाएं. वहीं प्रयोग में लाई गई किट को सही तरीके से नष्ट भी की जाएं.

ड्यूटी पर तैनात सीआईएसएफ कर्मचारियों के लिए गाइडलाइन में कहा गया है कि, बार्बर शॉप में बाल काटने की अनुमति नहीं दी जाएगी. हालांकि जिस भी सीआईएसएफ सदस्य के पास अपनी खुद की बाल काटने की किट हो या सभी निवारक उपायों को अपनाते हुए नाइयों से सहायता ले सकता है. सीसीटीवी कैमरों से निगरानी की जाएगी कि परिसर में सामाजिक दूरी का पालन हो रहा है या नहीं. हमेशा की तरह मेट्रो स्टेशन पर संवदेनशील स्थानों पर डॉग स्वचायड की उचित तैनाती की जाएगी. कोई भी सुरक्षाकर्मी किसी भी साथी से हाथ नहीं मिलाएगा या उसे गले नहीं लगाएगा. कोई भी हाथ के दस्ताने किसी भी सहकर्मी से आदान प्रदान नहीं करेगा. किसी भी व्यक्ति से अनावश्यक चर्चा करने से बचना होगा. कोई भेदभावपूर्ण टिप्पणी नहीं करेगा.

ड्यूटी के बाद बाहर घूमने से बचना होगा. मेट्रो स्टेशन के अंदर लिफ्ट, सीढ़ियों के रैलिंग, मेट्रो के दरवाजे व हैंडल को बिना दस्ताने के छूने से बचना होगा. मेट्रो स्टेशनों के अंदर लिफ्ट का प्रयोग न करें. व्यक्तिगत सामान को कॉटन बैग में रखे. किसी भी प्रकार के आभूषण, घड़ी को पहनने से बचना होगा. दिनभर गर्म पानी पिएं. खुद की पानी की बोतल से ही पानी पिएं. इसके अलावा आयुष मंत्रालय की सलाह अनुसार कम से कम 30 मिनट के लिए ध्यान योगासान रोज करना होगा.

अगर कोई सुरक्षाकर्मी या कर्मचारी ड्यूटी के दौरान अस्वस्थ नजर आता है या कुछ लक्षण नजर आते हैं तो तुरंत उसे नजदीकी अस्पताल में जांच के लिए भेजा जाए. एयरपोर्ट की स्क्रीनिंग प्रक्रिया का पालन किया जाए. जैसे ही संदिग्ध बैग के मामले में यात्री खुद बैग खोले और वस्तु को हटाएं. किसी भी परिस्थिति में कोई भी कर्मचारी किसी भी यात्रियों के शरीर को नहीं छुए. सभी सुरक्षा गैजेट, वॉकी-टॉकी, की-बोर्ड सहित अन्य उपकरण बार-बार साफ किए जाएं.

फिलहाल दिल्ली में कोविड संक्रमण की स्थिति गंभीर बनी हुई है और 60 हॉटस्पॉट पर मेट्रो लाइन स्टेशन पड़ते हैं, ऐसे में मेट्रो शुरू करना और उसको सुरक्षित तौर पर चलाना एक चुनौती होगी.

दिल्ली सरकार ने स्वास्थ्यकर्मियों से जुड़ा आदेश ठंडे बस्ते में डाला, कोविड ड्यूटी पर संक्रमित होने वालों को अब नहीं देना होगा कोई जवाब

डॉक्टरों का कहना है कि हर अस्पताल से पीपीई के इस्तेमाल और स्टॉक का आंकड़ा मांग लिया जाए तो पता चल जाएगा कि कोविड पॉज़िटिव स्वास्थ्यकर्मियों के लिए कौन जिम्मेदार है.

नई दिल्ली: दिल्ली के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग ने राजधानी के स्वास्थ्यकर्मियों से जुड़ा एक आदेश जारी किया था जिसका विरोध शुरू होने पर सरकार ने उसे अगले आदेश तक ठंडे बस्ते में डालने का फैसला किया है. पिछले आदेश में कहा गया था कि गैर-कोविड ड्यूटी वाले डॉक्टर, नर्स या पारामेडिक्स अगर कोविड पॉज़िटिव पाए जाते हैं या कोविड पॉज़िटिव के संपर्क में आते हैं तो उन्हें लिखित में बताना होगा कि उनके साथ ऐसा कैसे हुआ.

दिल्ली सरकार ने अपना आदेश अगले आदेश के आने तक ठंडे बस्ते में डाल दिया है.

इस आदेश का विरोध करते हुए अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) दिल्ली के रेज़िडेंट डॉक्टर एसोसिएशन (आरडीए) के सचिव श्रीनिवासन राजकुमार टी ने कहा कि दिल्ली सरकार को स्वास्थ्य कर्मियों को निशाना बनाने वाले ऐसे आदेशों को जारी करने से बचना चाहिए.

दिल्ली सरकार के आदेश में लिखा है, 'गैर-कोविड ड्यूटी वाले कई स्वास्थ्यकर्मियों या तो कोविड पॉज़िटिव पाए जा रहे हैं या कोविड पॉज़िटिव मरीज़ों के संपर्क में आ रहे हैं. संबंधित हॉस्पिटलों के मेडिकल डायरेक्टर ऐसे स्वास्थ्यकर्मियों को बेझिझक 14 दिन के क्वारेंटाइन में या तो होटल या उनके घर भेज दे रहे हैं.'

आदेश में आगे लिखा है कि इसकी वजह से अस्पतालों में स्वास्थ्यकर्मियों की भारी कमी हो रही है. आगे शक जताया गया है कि या तो ये अस्पताल सही प्रक्रिया का पालन नहीं कर रहे हैं या ऐसे लोग स्वास्थ्यकर्मियों से जुड़ी गाइडलाइन का पालन नहीं कर रहे हैं.

इन्हीं सबका हवाला देते हुए मेडिकल डायरेक्टरों को निर्देश दिया गया है कि कोविड पॉज़िटिव पाए जाने या कोविड पॉज़िटिव के संपर्क में आने वाले स्वास्थ्यकर्मियों से उन्हें लिखित में ये जानकारी मांगनी पड़ेगी कि आखिर इनके साथ ऐसा हुआ कैसे? इस बात पर भी ज़ोर दिया गया है कि स्वास्थ्यकर्मों जब प्रोटेक्टिव गियर पहन रहे हैं, तय दूरी बनाए रहे हैं और तय मानकों का पालन कर रहे हैं फिर भी पॉज़िटिव कैसे हो जा रहे हैं. ये भी कहा गया है कि मेडिकल डायरेक्टरों को डॉक्टरों की एक टीम का गठन करना होगा.

इस टीम का काम ये तय करना होगा कि जिस स्वास्थ्यकर्मों के बारे में ये जानकारी मिली है कि वो कोविड पॉज़िटिव के संपर्क में आया है, क्या वो भारत सरकार द्वारा जारी की गई उस गाइडलाइन में फिट बैठता है जिसके तहत किसी को किसी कोविड मरीज़ के संपर्क वाला घोषित किया जाता है.

हालांकि, एम्स दिल्ली सरकार के अंतर्गत नहीं आता फिर भी डॉक्टरों के खिलाफ़ ऐसे फ़रमान के भारत के सबसे बड़े हॉस्पिटल के आरडीए ने विरोध किया है. विरोध करते हुए ये भी कहा गया है कि सुप्रीम कोर्ट की सलाह के बावजूद स्वास्थ्यकर्मियों को पर्याप्त पीपीई नहीं मिले रहे.

एम्स आरडीए ने कहा, 'कोविड या गैर कोविड दोनो ही तरह के अस्पतालों के स्वास्थ्यकर्मियों को पर्याप्त पीपीई देन को कहा गया है. लेकिन ऐसा नहीं हो रहा. सुरक्षा से जुड़ी गाइडलाइन का पालन नहीं हो रहा. ओपीडी खोल रखा है. कोविड और गैर कोविड मरीज़ों के लिए जगहों का विभाजन नहीं किया गया है.'

इनका आरोप है कि सरकार की ख़राब योजना और उसे ख़राब तरीके से लागू करने की वजह से स्वास्थ्य कर्मियों में कोविड फैल रहा है. इन्हीं बातों का हवाला देते हुए स्वास्थ्यकर्मियों के सिर पर बीमार पड़ने का ठीकरा नहीं फ़ोड़ने को कहा गया है.

ये भी मांग की गई है कि हर अस्पताल से आंकड़ा मांगा जाए कि उनके यहां कितना पीपीई इस्तेमाल हो रहा है. ये भी कहा गया कि इस्तेमाल के अलावा पीपीई के स्टॉक का आंकड़ा मांग लिया जाए तो पता चल जाएगा कि कोविड पॉज़िटिव स्वास्थ्यकर्मियों के लिए कौन जिम्मेदार है.

एम्स के पूर्व आरडीए अध्यक्ष और वर्तमान में अस्टिटेंट प्रोफ़ेसर विजय गुर्जर ने ट्वीट कर सीएम अरविंद केजरीवाल, दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन और उपराज्यपाल अनिल बैजल पर तंज कसते हुए लिखा कि कोविड पीड़ित डॉक्टरों से लिखित में पॉज़िटिव होने का कारण पूछना क्या शानदार आइडिया है.

उन्होंने भी यही सवाल किया कि क्या स्वास्थ्यकर्मियों को पर्याप्त मात्रा में पीपीई दिया जा रहा है. अगर दिया भी जा रहा है तो क्या ये पूरी तरह से सुरक्षित होता है? इन्हीं सवालों के साथ उन्होंने कहा है कि क्या अब कोई क्वारेंटाइन में जाने की मांग कर जाएगा?

इस बारे में दिप्रिंट ने दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री का पक्ष जानने के लिए उनसे फ़ोन और मैसेज के जरिए संपर्क किया. स्टोरी पब्लिश होने तक उनका कोई जवाब नहीं आया है. जवाब मिलने पर इसे अपडेट कर दिया जाएगा.

मध्यप्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री बोले- सूबे में कोविड-19 अब नियंत्रण में, कमलनाथ के आईफा में व्यस्त होने से बिगड़े थे हालात

स्वास्थ्य और गृहमंत्री डॉ.नरोत्तम मिश्रा ने कहा,'मध्यप्रदेश कोरोना संक्रमण पर काबू पाने के लिए बहुत तेजी से काम कर रहा है. राज्य में कोरोना संक्रमित मरीज मिलने की दर पिछले 24 अप्रैल से 11.04% से घटकर आज 4.2% पर आ गई है.

नई दिल्ली: कोरोना संक्रमण के मामले में मध्यप्रदेश अभी भी कोरोना का हॉटस्पाट बना हुआ है. दिप्रिंट हिंदी से बातचीत में सूबे के नए स्वास्थ्य और गृहमंत्री डॉ.नरोत्तम मिश्रा ने कहा,'मध्यप्रदेश कोरोना संक्रमण पर काबू पाने के लिए बहुत तेजी से काम कर रहा है. राज्य में कोरोना संक्रमित मरीज मिलने की दर पिछले 24 अप्रैल से 11.04% से घटकर आज 4.2% तक आ गई है. प्रदेश में स्वस्थ मरीज होने की दर बढ़कर 14.45% तक पहुंच गई है.वहीं मृत्यु दर पिछले 10 दिन में 8.14% से घटकर 5.08% तक आ गई है.'

उनका आरोप है कि प्रदेश में कोरोनासंक्रमण के तेज़ी से बढ़ने के पीछे पिछली कमलनाथ सरकार है. डॉ.नरोत्तम मिश्रा ने आरोप लगाया है कि कांग्रेस की कमलनाथ सरकार का पूरा ध्यान फिल्म कलाकार 'सलमान खान और जैकलिन फर्नांडीस के साथ आईफा अवार्ड' पर था. प्रदेश के उन जमातियों की चिंता नहीं थी, जिससे कोरोना संक्रमण कई शहरों में फैल गया. उनका आरोप है कि कमलनाथ सरकार का इसमें इंटेलिजेंस फेल्योर है.

सूबे के स्वास्थ्य मंत्री ने दावा किया है, 'भाजपा सरकार ने आते ही कोरोना को लेकर काम किया, आज स्थिति नियंत्रण में आ गई है।' आप को याद होगा कि मध्यप्रदेश में कमलनाथ की सरकार को गिराकर शिवराज चौहान ने 23 मार्च को मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी. और वे अकेले की राज्य का कामकाज देख रहे थे. सत्ता में आने के लगभग एक महीने बाद 21 तारीख को उन्होंने मंत्रिमंडल का विस्तार किया था. उनकी सरकार पर कोविड 19 से ठीक से न निपट पाने के आरोप लगते रहे हैं.

पीएम मोदी से बात कर नया दल का किया है गठन

इंदौर और भोपाल जैसे शहरों में संक्रमण के बढ़ते मरीजों और खराब होती स्थिति पर डॉ.मिश्रा ने दिप्रिंट कहा, 'हमने सोमवार को ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से चर्चा के बाद सीएम शिवराज सिंह चौहान के साथ बैठक कर जांच दल का गठन किया है. जिसमें विशेषज्ञों के जांच दल में एक वरिष्ठ आईएएस व आईपीएस अधिकारी, स्वास्थ्य विभाग का वरिष्ठ अधिकारी, खाद्य विभाग के अधिकारी सहित 10 लोग होंगे. यह दल कोरोना प्रभावित प्रमुख शहरों में ही काम करेगा और रिपोर्ट बनाएगा.'

उन्होंने आगे कहा, 'रेड जोन के जिलों में भारत सरकार के अनुसार काम कर रहे हैं और जल्दी ही इन शहरों में आपको स्थिति नियंत्रण में दिखाई देगी. 23 मार्च के बाद इंदौर और भोपाल में जैसे ही स्थिति समझ में आई हमारी सरकार ने वहां के कलेक्टर को भी बदल

बता दें कि देश में कोरोनासंक्रमण के बढ़े मामलों में तबलीगी जमाती पर आरोप लगे हैं. यहां तक की केंद्र सरकार ने भी माना था कि देश में तेजी से बढ़े संक्रमण के मामले निजामुद्दीन मरकज और उसके बाद वहां से निकले तबलीगी जमात के देशभर में फैलने के बाद बढ़े हैं. जिसके बाद देशभर में तबलीगी जमात से जुड़े लोगों की खोज की जाने लगी.

प्रदेश में तबलीगी जमात के वजह से मामले बढ़ने के सवाल पर उन्होंने दिप्रिंट से कहा कि, 'मध्यप्रदेश के इंदौर और भोपाल शहरों में तबलीगी जमात की वजह से कोरोना संक्रमण के मामले बहुत तेजी से आगे बढ़े हैं क्योंकि कमलनाथ सरकार ने 23 मार्च से पहले तबलीगी जमात के लोगों पर ध्यान नहीं दिया। उनकी इंटेलिजेंस टीम का फेल्योर है। इसकी बड़ी वजह से वह सब अपने-अपने क्षेत्रों में बहुत अंदर तक कोरोना का संक्रमण लेकर चले गए लेकिन फिर भी हमने अपनी सरकार बनते ही बहुत तेजी के साथ कांग्रेस सरकार की गलती को भी ठीक करने का काम किया है।'

मिश्रा ने दिप्रिंट कहा, 'कमलनाथ सरकार ने इस ओर ध्यान दिया होता तो आज हम मध्य प्रदेश में कोरोना संक्रमण से मुक्त हो चुके होते लेकिन तबलीगी जमात के लोगों ने केवल मध्यप्रदेश में ही नहीं पूरे देश में कोरोना संक्रमण फैला कर कई लोगों की जान संकट में डालने का काम किया है लेकिन अब हमारी तैयारी पूरी है और आप देखेंगे कि हम बहुत जल्द कोरोना संक्रमण पर विजय प्राप्त कर लेंगे।' डॉ मिश्रा ने आगे कहा, 'राज्य में जब कांग्रेस की सरकार थी और कमलनाथ सरकार को बचाने में लग हुए थे। जिसकी वजह से इस रोग ने तेजी से सूबे में पैर फैलाया।'

उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि राज्य का प्रशासनिक अमला सीएम कमलनाथ की इच्छा की पूर्ति के लिए आईफा अवार्ड की तैयारियों में मस्त हो गया था। कोई सलमान खान की चिंता कर रहा था तो कोई जैकलिन फर्नांडीस की चिंता कर रहा था। राज्य और निवासियों की चिंता नहीं थी।

जिसे भी परेशानी हो सीधे मुझसे बात करें

हाल ही में इंदौर सहित अन्य शहरों में पुलिस और स्वास्थ्य विभाग की टीम पर हुए हमले के मामले में सरकार की तैयारियों के सवाल पर स्वास्थ्य मंत्री मिश्रा ने दिप्रिंट को बताया, 'मैं सूबे का गृहमंत्री भी हूँ और यदि राज्य

में ऐसी कोई भी पुनरावृत्ति होती है तो हमलावरों पर रासुका जैसे कड़े कानून के तहत कार्रवाई किए जाने के आदेश मैंने दिए हैं. किसी भी हालत में दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा.

उन्होंने आगे कहा, 'मैंने पुलिस और स्वास्थ्य कर्मियों का मनोबल बढ़ाने के लिए घटना में घायल पुलिस कर्मचारी और डॉक्टर से स्वयं बात कर विपरीत परिस्थितियों में समाज की सेवा करने के लिए धन्यवाद दिया और व्यक्तिगत रूप से उन्हें किसी भी परेशानी के लिए सीधे मुझसे बात करने के लिए भी कहा है.'

स्वास्थ्य विभाग के अफसर अब आ चुके हैं घर

स्वास्थ्य विभाग से जुड़े कर्मचारियों और पुलिस महकमे में संक्रमितों के केस बढ़ने के मामले में स्वास्थ्य मंत्री कहते हैं, 'मध्यप्रदेश में जो भी स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारी अफसर कोरोना संक्रमण के शिकार हुए थे उनमें से अधिकांश या तो घर वापस आ चुके हैं या फिर कुछ समय में वापस आने वाले हैं. समाज की सेवा के दायित्व में उनको यह परेशानी जरूर हुई लेकिन हमारे पुलिस विभाग के जो कर्मचारी कोरोना संक्रमित हुए उनमें से ज्यादातर जमात के लोगों को पकड़ने के लिए उनके क्षेत्रों में गए और वहां से कोरोना संक्रमित होने के बाद उन्हें या तो फौरन क्वारेंटाइन कराया गया है या फिर उनका अस्पताल में इलाज चल रहा है.'

देश में लगातार यह बात उठती रही है कि सरकारी अस्पतालों में सुविधाएं नहीं हैं. फ्रंटलाइन वर्कर्स के पास खुद की सुरक्षा के लिए पीपीई किट नहीं हैं. ऐसे सवालों के जवाब में मिश्रा ने दिप्रिंट को बताया, 'मध्य प्रदेश में फिलहाल पीपीई किट, रैपिड टेस्टिंग किट और हाइड्रोक्सी क्लोरोक्वीन दवा की कोई भी कमी नहीं है. हम करीब दो हजार से अधिक जांच प्रतिदिन कर रहे हैं और हमारे सभी अस्पतालों में सभी सुविधाओं के साथ कोरोना संक्रमित मरीजों का इलाज चल रहा और इसका बड़ा उदाहरण यह है कि हमारे यहां ठीक होने की दर 14.50 प्रतिशत से ऊपर चली गई है.'

कोई घटना हुई तो पुलिस निपटने के लिए सक्षम

स्वास्थ्य मंत्री के साथ गृहमंत्री का जिम्मा भी संभाल रहे डॉ.नरोत्तम मिश्रा का दिप्रिंट से कहना है कि,'हम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की सहमति से मध्यप्रदेश में कोरोना संक्रमण से प्रभावित और संभावित के साथ अप्रभावित जिलों पर भी लॉकडाउन का सख्ती से पालन करा रहे हैं.'

'मध्यप्रदेश पुलिस हमारी राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ लॉकडाउन का सख्ती से पालन कराने में बहुत सक्षम है. उसी का नतीजा है मध्यप्रदेश के चाहे कंटेनमेंट एरिया हो या क्वारेंटाइन किए गए लोग हो सभी के साथ बेहतर सामंजस्य बनाकर काम कर रहे हैं और इसको रोकने के लिए कार्य कर रहे हैं और प्रभावी कदम उठा रहे अगर फिर भी कहीं से कोई घटना आती है तो हमने अपने सभी पुलिस अधिकारियों को सख्ती से भारत सरकार और राज्य सरकार के दिशा निर्देशों का पालन कराए जाने की निर्देश दे दिए हैं.' मध्यप्रदेश में कोरोना संक्रमित की संख्या 2519 पहुंच गई है. जबकि 123 लोगों की मौत भी हो चुकी है.फिलहाल 10 हजार सैंपल की जांच रिपोर्ट आना अभी बाकी है. प्रदेश में जिस तरह से आए दिन कोरोना के केस सामने आ रहे हैं उससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि कोरोना का कहर प्रदेश में अभी थमा नहीं है. जैसे- जैसे सैंपल की जांच रिपोर्ट आएगी यहां मरीजों की संख्या में बढोत्तरी हो सकती है.

बुलंदशहर में साधुओं की हत्या- पुलिस का कहना कि चिमटा चुराने पर हुआ विवाद, भांग के नशे में युवक ने मारा

बुलंदशहर के एसएसपी ने कहा कि सोशल मीडिया पर कुछ लोग इसे सांप्रदायिक रंग न दें इसीलिए आरोपी का नाम बता दिया गया है. ये आपसी विवाद के कारण हत्या का मामला है जिसमें पुलिस कड़ी कार्रवाई करेगी.

लखनऊ/बुलंदशहर: महाराष्ट्र के पालघर में बीते दिनों हुई दो संतों की हत्या के बाद अब उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर में साधुओं की हत्या का मामला सामने आया है। सोमवार देर रात बुलंदशहर के गांव पगोना में स्थित शिव मंदिर में दो साधुओं की हत्या कर दी गई। मंगलवार सुबह जब गांव के लोग मंदिर में पहुंचे तो उन्हें साधुओं के खून से लथपथ शव पड़े मिले। फिलहाल पुलिस ने इस मामले में उसी गांव से एक युवक को गिरफ्तार किया है।

बुलंदशहर के एसएसपी संतोष कुमार सिंह ने दिप्रिंट को बताया, 'गिरफ्तार किए गए 25 वर्षीय युवक का नाम राजू उर्फ मुरारी है। वह उसी गांव का रहने वाला है। उसने दो दिन पहले साधुओं का चिमटा गायब कर दिया था जिसके चलते साधुओं ने उसे डांटा था। प्रथम दृष्टया तो यही लग रहा है कि इसी कारण उस व्यक्ति ने दोनों साधुओं को मारा। ये पुलिस को नशे की हालत में मिला है। गांव के लोग बता रहे हैं कि आरोपी युवक अक्सर भांग का नशा करता था। फिलहाल आरोपी गिरफ्त में है, इसका मेडिकल कराया जा रहा है'।

एसएसपी के मुताबिक, नशे में आरोपी हत्या की बात स्वीकार कर रहा है। ये भी बता रहा है कि डंडे से इसने हत्या की थी न कि किसी धारदार हथियार से। पुलिस ने फिलहाल हत्या के आरोप में मुकदमा दर्ज कर लिया है और घटना स्थल से डंडे को भी बरामद कर लिया है। एसएसपी ने ये भी कहा कि सोशल मीडिया पर कुछ लोग इसे सांप्रदायिक रंग न दें इसीलिए आरोपी का नाम बता दिया गया है। ये आपसी विवाद के कारण हत्या का मामला है जिसमें पुलिस कड़ी कार्रवाई करेगी। फिलहाल धारा 302 के तहत मर्डर के आरोप में केस दर्ज कर लिया गया है।

दिप्रिंट को मिली जानकारी के मुताबिक, बुलंदशहर के गांव पगोना में बने शिव मंदिर में पिछले करीब 10 साल से साधु जगनदास (55 वर्ष) और सेवादास (35 वर्ष) रहते थे। गांव के लोगों का अक्सर वहां आना-जाना लगा रहता था। आरोपी युवक राजू भी वहां आता रहता था। उसको चिमटा चुराने के आरोप में दो दिन पहले साधुओं ने डांट कर भगाया था जिसको लेकर वह नाराज चल रहा था। बुलंदशहर पुलिस के मुताबिक, आरोपी

को घटनास्थल से करीब दो किलोमीटर दूर दूसरे गांव से अर्द्धनग्न अवस्था में गिरफ्तार किया गया तब वह नशे में था.

सोशल मीडिया पर पालघर से हो रही तुलना

सोशल मीडिया पर लोग इस मामले की तुलना पालघर में हुई साधुओं की हत्या से कर रहे हैं और पोस्ट कर रहे हैं.

इस पर शिवसेना के वरिष्ठ नेता संजय राउत ने ट्वीट कर कहा है- 'भयानक! बुलंदशहर, यूपी के एक मंदिर में दो साधुओं की हत्या, लेकिन मैं सभी से अपील करता हूं कि वे इसे सांप्रदायिक न बनाएं, जिस तरह से कुछ लोगों ने पालघर मामले में करने की कोशिश की'.

यूपी के पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने ट्वीट कर कहा है- 'यूपी के बुलंदशहर में मंदिर परिसर में दो साधुओं की नृशंस हत्या अति निंदनीय व दुखद है. इस प्रकार की हत्याओं का राजनीतिकरण न करके, इनके पीछे की हिंसक मनोवृत्ति के मूल कारण या आपराधिक कारण की गहरी तलाश करने की आवश्यकता होती है. इसी आधार पर समय रहते न्यायोचित कार्रवाई करनी चाहिए'.

बीजेपी यूपी के प्रवक्ता राकेश त्रिपाठी ने कहा है कि बुलंदशहर में साधुओं की हत्या अत्यंत पीड़ा जनक है. हत्यारे अर्ध विक्षिप्त मुरारी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है. बुलंदशहर की घटना की तुलना पालघर माॅब लिंग से उचित नहीं है. पालघर में साधुओं की हत्या पुलिस की मौजूदगी में हुई थी, पालघर षड्यंत्र है, जिसका खुलासा होना ही चाहिए.

